083

CAL-02

December - Examination 2015

CAL Examination

अपभ्रंश काव्य छंद (मात्रिक) एवं अलंकार

Paper - CAL - 02

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 100**

निर्देश :–

1) यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों 'अ', 'ब' और 'स' में विभाजित है।

10 x 2 = 20

सैक्शन – A

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 2 (दो) अंक का है।

1) (i) हेमचन्द्र को क्या कहा जाता है?

(ii) मूर्च्छित मनुष्य कौन होता है?

(iii) परमात्मप्रकाश मुक्तक काव्य किस धारा का काव्य है?

(iv) पउमचरिउ में कितने काण्ड हैं और कुल कितनी संधियाँ हैं?

(v) महापुराण के रचयिता का नाम बताइए।

(vi) करकण्डचरिउ के अनुसार 'मंत्री ने मेरे पुत्र को मार डाला' यह जानकर भी राजा मंत्री पर क्रुद्ध क्यों नहीं हुआ?

(vii) 'जंबूसामिचरिउ' में किसके द्वारा कथानक कहा गया है?

(viii) किस कार्य के फलस्वरूप अकृतपुण्य का जीव मरकर स्वर्ग में उत्पन्न हुआ?

(ix) वियावना अलंकार का लक्षण लिखिए।

(x) दोहा छन्द का लक्षण लिखिए।

सैक्शन – B

4 x 10 = 40

निर्देश : निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नों में से कोई 4 (चार) प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 (दस) अंक का है। शब्द सीमा अधिकतम 200 शब्द है। निम्नलिखित काव्यांशो का हिन्दी में अनुवाद कीजिए तथा व्याकरणिक विश्लेषण भी लिखिए।

2) सायरु उप्परि तणु धरइ तलि घल्लइ रयणाइँ।
सामि सुमिच्चु विपरिहरइ संमाणेइ खलाइं।।

3) दाणु कुफ्तहं दोसडइ बोल्लिज्जइ ण हु भंति।
पत्थरु पत्थरणाव कहिं दीसइ उत्तारंति।।

4) अत्थि ण पुण्णु ण पाउ जसु अत्थि ण हरिसु विसाउ।
अत्थि ण एक्कु वि दोसु जसु सो जि णिरंजणु भाउ।।

5) ण वि तुहुं पंडिउ मुक्खु ण वि ण वि ईसरु ण वि णीसु।
ण वि गुरु कोइ वि सीसु ण वि सव्वइं कम्मविसेसु।।

6) गोपएण किं णहु माणिज्जइ अण्णाणें किं जिणु जाणिज्जइ।
वायसेव किं गरुडु णिरुज्झइ णकवमलेण कुलिसु किं विज्झइ।।

7) वाराणसिणयरि मणोहिरामु अरविंदु णराहिउ अत्थि णामु।
संतोसु वहंतउ णियमणम्मि पारद्धिहैं गउ एक्कहिं दिणम्मि।।

8) इयरहँ दिव्वाहरणहँ पासिड सीलु वि जुवइहे मंडणु भासिउ।
हरिवि णीय जा किर दहवयणें सीलें सीय दड्ढ णउ जलणें।।

9) लउडि–खग्ग सव्वहिं करि धारिय भोगवइ चल्लिय विणिवारिय।
दूरहु हुंति तेण णियच्छिय हक्क दिंत आवंत विपेच्छिय।।

सैक्शन – C

2 x 20 = 40

(कोई भी दो प्रश्न करना अनिवार्य है)

निर्देश : निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नों में से कोई 2 (दो) प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 (बीस) अंक का है। शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द है।

10) निम्नलिखित काव्यांशो का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। तथा व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

कं दिवसु वि होसइ आरिसाहुँ कज्चुइ–अवत्थअम्हारिसाहुँ।।
को हउँ का महि कहो तणउ दव्वु सिंहासणु छत्तइँ अथिस सव्वु।।
जोव्वणु सरीस जीवउ धिगत्थु संसास असारु अणत्थु अत्थु।।
विसु विसय वन्घु दिढ–वन्धणाइँ घर दारइँ परिहव–कारणाइँ।।
सुय सत्तु विढत्तउ अवहरन्ति जर–मरवहँ किङ्कर किं करन्ति।।
जीवाउ वाउ हय हय वराय सन्दण सन्दण गण गय जे णाय।।
तणु तणु जे खणद्धें खयहो जाइ घणु घणु जि गुणेण वि वंङ्क थाइ।।
दुहिया वि दुहिय माया वि माय सम–भाउलेन्ति किर तेण माय।।

धत्ता– आयइँ अवरइ मि सव्वइँ राहवहों समप्पेवि।
अप्पणु तउ करमि थिउ दसरहु एम वियप्पे वि।।

11) निम्नलिखित काव्यांश का हिन्दी अनुवाद व्याकरणिक विश्लेषण सहित कीजिए।

तं निसुणेवि कुमारें वुच्चइ विसु साहीणु किं न लहु मुच्चइ।।
रयणिहि नयरे सियालु पइट्ठउ मुउ बलद्दु रच्छा मुर्हे दिट्ठउ।।
भक्खवंतेण दंत–वणे काणिउँ रयणिविरामपमाणु न जाणिउँ।।
हुएँ पहाएँ वस–आमिसमुज्झिउ जणसंचारवमालें बुज्झिउ।।
भयकंपिरु नीसरिवि न सक्कड चिंतियमंतु पडेविणु थक्कड।।
अप्पउ मुयउ करिवि दरिसावमि किर वणु पुण वि निसागमि पावमि।।
दीसइ दिवसि मिलिय पुरलोएं एक्कें नरेण पवड्ढि यरोएं।।
ओसहत्थु लुउ पुच्छत्सकण्णउ चिंतइ जंषुउ अज्ज दि घण्णउ।।
जीवेसमि अपुच्छु विणु कण्णहि एक्कबार जइ छुट्टमि पुण्णहि।।
बोल्लइ अवस एक्कु कामुयजणु गेण्हमि दब्बु करमि वसि पियमणु।।

12) निम्नलिखित काव्यांश का हिंदी अनुवाद कीजिए तथा व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए।

ता एक्कहिँ दिणि मंतीवरेण तर्हो रायर्हो णंदणु हरिवि तेण।।
आहरणइँ लेविणु दिहिकरासु गउ तुरिउ विलासिणि मंदिरासु।।
गयमोल्लइँ जणणयणँ पियाइँ तहिँ वणिणा ताहे समप्पियाइँ।।
सरयागमस हर आणणी है पुणु बहियउ तेण विलासिणीहै।।

मइँ मारिउ णंदणु णखईर्हिं इउ बहियउ सयलु वि धिररईर्हिं।।
तं सुणिवि ताइँ पमणिक सणेहु मा कासु वि पयडु करेहि एहु।।
एत्तर्हिं अलहर्तें सुउ णिवेण देवाविउ डिं डिमु णायरे तेण।।
जो रायर्हो णंदणु कहइ को वि सहुँ दविणइँ मेइणि लहइ सो वि।।

धत्ता – ता केण वि धिट्ठें तुरियएँण णरणाहर्हो अग्गइँ भणिउ।
उवलक्खिउ तुह सुउ देव मइँ सो णवलइँ मंतिएँ हणिउ।।

13) निम्नलिखित काव्यांश का हिन्दी अनुवाद कीजिए। इस काव्यांश की व्याकरणकी हिंदी से विवेचनाभी कीजिए।

ता दूउ विणिग्गओ णियपुर गओ तस्मि णिवणिवासं।
सो विण्णवइ सायरं सारसायरं पणविउं महीसं।।

विसमु देव बाहुबलि षरेसरु णेहुण संघइ संघइ गुणि सस।।
कज्जु ण बंघइ बंघइ परियस संधि ण इच्छइ इच्छइ संगस।।
पइं णउ पेच्छइ पेच्छइ भुयबलु आण ण पालइ पालइ णियछलु
माणुण धंडइ धंडइ मयरसु दयवुण चिंतइ चिंतइ पोरिसु।।
संति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि पुछ्इ ण देइ देइ वाणावलि।।
तुज्झु ण णवइ णवइ मुणितंडउ अंगु ण कड्ढइ कड्ढइ खंडउ।।
देवण देइ भाइ तुह पोयणु पर जाणामि देसइ रणमोयणु।।
ढोयइ रयणइं णउ करिरयणंइ ढोएसइ ध्रुपु णरउररयणइं।।

———